पवित्र आत्मा: सामर्थ्य, उद्देश्य और प्रतिज्ञा

The Holy Spirit: Power, Purpose and Promise

नई सृष्टि श्रृंखला

New Creation Series

Rev. Sarvjeet Herbert

© 2026 नई सृष्टि सेवकाई / Nayi Srishti Ministries

यह सामग्री स्वतंत्र रूप से उपयोग की जा सकती है।
हम केवल यह अनुरोध करते हैं कि आप स्रोत को स्वीकार करें
और नई सृष्टि सेवकाई को श्रेय दें।
हमारा उद्देश्य सुसमाचार का प्रसार है।

This content may be freely used by anyone.
We only request that you acknowledge the source
and give credit to Nayi Srishti Ministries.
Our purpose is the spread of the Gospel.

स्रोत / Source:
Nayi Srishti YouTube Channel

आभार / Acknowledgment

मैं अपने माता–पिता के प्रति गहरा आभार व्यक्त करता हूँ,
विशेषकर अपने पिता के लिए, जो परमेश्वर के एक निष्ठावान सेवक थे।
उनकी fervent (लगातार और प्रबल) प्रार्थनाओं ने
मेरे विश्वास और सेवकाई की नींव रखी।

मैं अपने प्रिय परिवार के सदस्यों के लिए
हृदय से धन्यवाद देता हूँ,
जिनका प्रेमपूर्ण समर्थन, विश्वासपूर्ण दृष्टिकोण
और हर परिस्थिति में साथ खड़े रहना
मेरे जीवन और सेवकाई में परमेश्वर के अनुग्रह का
एक शांत, मजबूत और भरोसेमंद प्रमाण रहा है।

मैं नम्रता के साथ उन सभी लोगों को भी स्वीकार करता हूँ
जो मेरे लिए निरंतर प्रार्थना करते रहे हैं।
उनकी अदृश्य लेकिन सामर्थी मध्यस्थ प्रार्थनाएँ
मेरी आत्मिक यात्रा में एक महान और अनमोल सहारा रही हैं।

मैं उन सभी लोगों के लिए भी आभारी हूँ
जिन्होंने इस पुस्तक की तैयारी में,
प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, सहयोग प्रदान किया।

विषय सूची / Table of Contents

अध्याय 1: पवित्र आत्मा हमें आज्ञा मानने में सहायता करता है

The Holy Spirit Empowers Us to Obey

अध्याय 2: पवित्र आत्मा परमेश्वर की प्रतिज्ञा थी

The Holy Spirit - God's Promised Gift

अध्याय 3: पवित्र आत्मा सत्य को प्रकट करता है

The Holy Spirit Unveils Divine Truth

अध्याय 4: पवित्र आत्मा हमें पाप का बोध कराता है

The Holy Spirit Convicts Our Hearts

अध्याय 5: पवित्र आत्मा का बोध का कार्य

The Holy Spirit's Ministry of Conviction

अध्याय 6: पवित्र आत्मा एक सांत्वनादाता है

The Holy Spirit - Our Divine Comforter

अध्याय 7: पवित्र आत्मा एक गवाह है

The Holy Spirit Bears Witness

अध्याय 1: पवित्र आत्मा हमें आज्ञा मानने में सहायता करता है

The Holy Spirit Empowers Us to Obey

जैसा कि हम पवित्र आत्मा के विषय में प्रभु यीशु मसीह की उस चर्चा का अध्ययन कर रहे हैं जो उन्होंने अपने चेलों के साथ की थी, आज हम देखेंगे कि यह पवित्र आत्मा क्यों आवश्यक था। प्रभु यीशु मसीह ने कहा था कि मैं जाऊंगा और पिता से विनती करूंगा कि वह तुम्हारे लिए पवित्र आत्मा भेजें। इसका उत्तर हमें यहुन्ना 14:15 में मिलता है: "यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।

" प्रभु यीशु मसीह अपने चेलों से आगे आने वाले विधान अर्थात New Covenant में उस महान आज्ञा के बारे में चर्चा कर रहे हैं जो प्रेम की आज्ञा है। मत्ती 22:37 में देखते हैं कि यीशु मसीह ने दस आज्ञाओं को संक्षेप में दो मुख्य आज्ञाओं में बताया, और इन आज्ञाओं का आधार प्रेम है। यहां पर बहुत से फरीसी और व्यवस्थापक यीशु मसीह के पास आकर पूछते हैं, "हे गुरु, व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है?

" यीशु मसीह ने उनसे कहा, "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।

" प्रभु यीशु मसीह अपने चेलों को यह आज्ञा दे रहे हैं कि यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो तो तुम्हें परमेश्वर से प्रेम करना होगा और अपने साथियों से भी प्रेम करना होगा। लेकिन सवाल यह है कि चेले कैसे प्रेम कर सकते हैं? मनुष्य की रचना में पाप के प्रभाव के कारण आज मनुष्य परमेश्वर के स्वभाव से अलग हो गया है, और इसलिए उसके लिए असंभव है कि वह परमेश्वर से प्रेम कर सके और मनुष्य से भी प्रेम कर सके।

इसलिए प्रभु यीशु मसीह कह रहे हैं कि जब पवित्र आत्मा आएगा तो वह इस प्रेम को तुम्हारे जीवन से बहने देगा। कैसे? रोमियों 5:5 में लिखा है कि "परमेश्वर का प्रेम पवित्र आत्मा के द्वारा तुम्हारे हृदय में डाला जाता है।

" प्रभु यीशु मसीह अपने चेलों से पवित्र आत्मा के बारे में यह बता रहे हैं कि वह जाकर परमेश्वर से विनती करेंगे कि वह अपना आत्मा अर्थात पवित्र आत्मा उनके बीच भेजें। आज भी हमारे लिए यह पवित्र आत्मा अत्यंत महत्वपूर्ण है। बिना इसके हम परमेश्वर के स्वभाव को नहीं पा सकते, बिना पवित्र आत्मा के हम परमेश्वर की आज्ञाओं को भी पूरा नहीं कर सकते।

परमेश्वर ने दस आज्ञाएं दी हैं और वे आज भी लागू होती हैं। लेकिन प्रभु यीशु मसीह ने इन दस आज्ञाओं को संक्षेप में बताया है और याकूब 2:8 में इसे राज्य की आज्ञा कहा गया है। हम बहुत कुछ तोड़ सकते हैं लेकिन राज्य की आज्ञा नहीं तोड़ सकते, और यह राज्य की आज्ञा अर्थात प्रेम—यह हम बिना पवित्र आत्मा के नहीं कर सकते।

यह प्रेम वह तत्व है, वह सार है जो परमेश्वर का है। जब मनुष्य मुक्ति पाता है, उद्धार पाता है, तो पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर का प्रेम उसकी आत्मा में डाला जाता है। इसलिए पवित्र आत्मा की चर्चा करते हुए प्रभु यीशु मसीह बता रहे हैं कि यह तुम्हारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है, और इसीलिए मैं जाकर परमेश्वर पिता से विनती करूंगा कि वह तुम्हारे लिए अपना आत्मा भेजें जो तुम्हारे अंदर रहेगा, हर समय तुम्हारे साथ रहेगा—indwelling of the Holy Spirit।

और यह पवित्र आत्मा का सबसे बड़ा कार्य है जो हमारे स्वभाव को, हमारे जीवन को परिवर्तित कर देता है। जिसे हम परमेश्वर का प्रेम कहते हैं, वह पवित्र आत्मा का फल है जो परमेश्वर हर एक के जीवन में देखना चाहता है। यीशु मसीह ने कहा, "मैं दाखलता हूं, तुम डालियां हो"—अर्थात मेरा जीवन पवित्र आत्मा के द्वारा तुम्हारे अंदर फलना चाहिए।

तो पवित्र आत्मा परमेश्वर की आज्ञा को मानने के लिए हमारी सहायता करता है, और सबसे बड़ी आज्ञा यह है कि हमें एक-दूसरे से प्रेम करना चाहिए। यह सबसे महत्वपूर्ण कार्य था पवित्र आत्मा का जो यीशु मसीह के चेलों के जीवन में महत्वपूर्ण था। और आज हर वह व्यक्ति जो उनके चेलों के वचनों को सुनकर यीशु मसीह पर विश्वास करता है और विश्वासी कहलाता है, उनके जीवन में भी यह उसी प्रकार लागू होता है।

इसके बाद, पवित्र आत्मा के विषय में यीशु मसीह जो चर्चा कर रहे हैं उसमें वह बता रहे हैं कि मैं विनती क्यों करूंगा। विनती इसलिए करूंगा क्योंकि मैं शरीर में स्वर्ग में चला जा रहा हूं। हाड़ और मांस में मैं परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ एक महायाजक की सेवा करने जा रहा हूं ताकि मैं सारी मानवता को परमेश्वर पिता के सम्मुख प्रस्तुत कर सकूं।

तो आज सारी मानवता का प्रतिनिधित्व उस स्वर्गीय स्थान में परमेश्वर पिता के सामने यीशु मसीह हमारे लिए कर रहे हैं। लेकिन इस पृथ्वी पर जो लोग प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, यीशु मसीह उनसे कहते हैं, "मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोडूंगा, मैं तुम्हारे अंदर आकर रहूंगा। " Christ the hope of glory lives in us—आज मसीह अर्थात जो अभिषिक्त है, परमेश्वर है, वह हमारे जीवन में कैसे रहता है?

वह पवित्र आत्मा के द्वारा रहता है। वह महिमा जो परमेश्वर की आदम के जीवन से अलग हो गई थी, पवित्र आत्मा उसे मसीह की महिमा को फिर से हमारे अंदर पुनर्स्थापित कर देता है। अर्थात पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा हमारी आत्मा में आकर रहते हैं और हमारे साथ संगति करते हैं।

तो पवित्र आत्मा का आज के इस युग में बहुत महत्वपूर्ण कार्य है। यदि आप पवित्र आत्मा से भाग रहे हैं या पवित्र आत्मा से भय खा रहे हैं तो आप यीशु मसीह को नहीं जान सकते। बिना पवित्र आत्मा के हम यीशु मसीह के पास नहीं आ सकते क्योंकि पवित्र आत्मा परमेश्वर है जो हमारी आत्मा में आकर रहता है।

He will dwell in you, He will be in you—"in you" means He will live, He will dwell in spirit। God is spirit and we are spirit beings, so Holy Spirit lives in spirit। यह चर्चा प्रभु यीशु मसीह अपनी मृत्यु से पहले अपने चेलों को बता रहे थे कि देखो, पवित्र आत्मा कितना महत्वपूर्ण है।

तो क्या आज हमारे लिए पवित्र आत्मा की आवश्यकता नहीं है? उनसे भी अधिक हमें पवित्र आत्मा की आवश्यकता है, और यह पवित्र आत्मा उपलब्ध है। आज पवित्र आत्मा उंडेल दिया गया है और हर वह व्यक्ति जो यीशु मसीह पर विश्वास करता है, वह इसके योग्य है।

तो आइए हम देखें कि यीशु मसीह इस पवित्र आत्मा परमेश्वर के बारे में यहुन्ना 14 में आगे क्या कह रहे हैं। यदि आप अपने जीवन में दुखी हैं, परेशान हैं, तो यीशु मसीह एक मार्ग है, सत्य है। यदि आप यीशु मसीह को अपने जीवन में उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता के रूप में ग्रहण करेंगे तो वह पवित्र आत्मा आपकी सहायता करेगा।

यदि आप बीमार और रोगी हैं तो प्रभु यीशु मसीह आपको भला चंगा करेंगे। प्रभु यीशु मसीह के नाम से हर एक बीमारी, रोग, हर एक श्राप, हर एक दुष्टता की आत्मिक सेना जो आपके विरोध में काम करती है—प्रभु यीशु मसीह के सामर्थी नाम से हम अपने दर्शकों के जीवन से तोड़ते हैं और यह प्रार्थना करते हैं कि प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का प्रकाशन उनके जीवन पर पड़े और वे उस उद्धार, मुक्ति और अनंतकाल के आनंद को पा सकें।

अध्याय 2: पवित्र आत्मा परमेश्वर की प्रतिज्ञा थी

The Holy Spirit – God's Promised Gift

नई सृष्टि के इस कार्यक्रम में हम बताते हैं कि परमेश्वर सृष्टिकर्ता है और उसने हमारी सृष्टि की है। वह हमारी सृष्टि को जानता है कि हम एक आत्मिक प्राणी हैं—अर्थात हम एक आत्मा हैं, हमारे पास प्राण है, और हम इस शरीर में रहते हैं। यह मनुष्य की दशा है, लेकिन इस संसार में मनुष्य दो दशा में रहता है—एक पहले आदम की दशा और एक दूसरे आदम की दशा।

बाइबिल में लिखा है कि पहले आदम में सभी मरते हैं। यह मृत्यु पाप को दिखाती है क्योंकि मृत्यु मनुष्य के जीवन को परमेश्वर से अलग कर देती है। और दूसरा आदम प्रभु यीशु मसीह की दशा है, जिसमें हम एक नई सृष्टि बन जाते हैं।

इस नई सृष्टि में हमारे जीवन में जो सबसे मुख्य कार्य करता है वह है पवित्र आत्मा। इस कार्यक्रम में हम पवित्र आत्मा के बारे में चर्चा करेंगे कि यह पवित्र आत्मा कौन है, यह क्या करता है, यह कहां से आया है, और एक नई सृष्टि के जीवन में यह क्या कर सकता है। जब हम पवित्र आत्मा की चर्चा करते हैं या पवित्र आत्मा के बारे में सुनते हैं तो हम सोचते हैं कि यह हमारे लिए नहीं है, यह किसी और समुदाय के लिए है या किसी और समूह के लिए है।

लेकिन बाइबिल हमें बहुत स्पष्ट रूप से दिखाती है कि पवित्र आत्मा का कार्य हम प्रभु यीशु मसीह के जीवन में देख सकते हैं। यीशु मसीह एक संपूर्ण मानव बनकर इस पृथ्वी पर अपने जीवन को जिए और सारी मानवता के लिए एक आदर्श दिखाया। प्रभु यीशु मसीह ने इस पृथ्वी पर मानव के लिए उद्धार का कार्य किया।

इसलिए प्रभु यीशु मसीह को हम मुक्तिदाता कहते हैं। यीशु के नाम का अर्थ ही मुक्तिदाता है। लेकिन जब भी हम पूरी बाइबिल में, विशेषकर मत्ती, मरकुस, लूका और यहुन्ना में प्रभु यीशु मसीह के जीवन के बारे में पढ़ते हैं—कि यीशु मसीह का जन्म कैसे हुआ, यीशु मसीह ने क्या-क्या कार्य किया, यीशु मसीह ने कैसे क्रूस की मृत्यु को सहा, वह क्रूस पर मारे गए, गाड़े गए और मरकर जिंदा हुए—तो इन सारे कार्यों में प्रभु यीशु मसीह के साथ पवित्र आत्मा का कार्य होता रहा।

तो यह पवित्र आत्मा कौन है जो प्रभु यीशु मसीह के जीवन में अपने कार्यों को करता रहा? इसके लिए हमें प्रेरितों के काम में जाना होगा। प्रेरितों के काम से हम पवित्र आत्मा के बारे में जानेंगे कि पवित्र आत्मा कौन है।

वास्तव में पवित्र आत्मा स्वयं परमेश्वर है। परमेश्वर आत्मा है और पवित्र आत्मा परमेश्वर का आत्मा है। जब प्रेरितों की पुस्तक लिखी गई तो एक व्यक्ति थे, एक चिकित्सक थे, जिन्होंने सारे तथ्यों को जो कुछ भी प्रभु यीशु मसीह के द्वारा इस संसार में घटा—प्रभु यीशु मसीह की सारी जीवनी को, उनके सारे कार्यों को, उनकी सारी शिक्षाओं को—सबका अध्ययन किया।

सारी बातों को उन्होंने जांचा-परखा और सत्यापित किया। तब उन्होंने प्रेरितों के काम नामक पुस्तक को लिखा। इस पुस्तक में प्रेरितों के काम के पहले अध्याय के पहले पद से चौथे पद तक यह लिखा है: "मैंने पहली पुस्तक उन सब बातों के विषय में लिखी जो यीशु आरंभ से करता और सिखाता रहा, उस दिन तक जब तक वह उन प्रेरितों को जिन्हें उसने चुना था, पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठाया न गया।

और उसने दुख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया, और 40 दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा, और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा। और उनसे मिलकर उन्हें आज्ञा दी कि यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो जिसकी चर्चा तुम मुझसे सुन चुके हो। " इन पहले से चौथे पद में हम देखते हैं कि यीशु मसीह ने अपने जीवनकाल में सारे कार्यों को पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से किया।

और जब प्रभु यीशु मसीह मरकर जिंदा हुए तब भी वह पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से आज्ञा दे रहे हैं। यीशु मसीह का जन्म, यीशु मसीह का जीवनकाल, उनकी सेवाएं, यीशु मसीह की मृत्यु, उनका पुनरुत्थान और उनका स्वर्गारोहण—सारे कार्यों में, सारी बातों में यीशु मसीह के साथ पवित्र आत्मा का कार्य हम देखते हैं। यह घटना उस समय की है जब प्रभु यीशु मसीह मरकर जीवित हुए और अपने चेलों को दिखाई दिए।

प्रभु यीशु मसीह ने अपने चेलों को पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में आज्ञा दी। दूसरे पद में हम देखते हैं कि "पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठाया गया। " अंतिम समय में, जब तक पृथ्वी पर प्रभु यीशु मसीह का समय था, तब तक उन्होंने पवित्र आत्मा की सहायता ली—अर्थात पवित्र आत्मा के द्वारा उन्होंने अपने चेलों को आज्ञा दी, और फिर वे स्वर्ग में उठा लिए गए।

जब हम चौथे पद में आते हैं तो यहां लिखा है कि प्रभु यीशु मसीह ने कौन सी आज्ञा अपने चेलों को दी। वह कौन सी इतनी महत्वपूर्ण आज्ञा थी जो पवित्र आत्मा के द्वारा उन्होंने अपने प्रेरितों को दी? जब वह अपने चेलों के सामने देखते-देखते बादलों में स्वर्ग में उठा लिए गए, तब वह जो आज्ञा दे रहे हैं उसे एक प्रतिज्ञा से जोड़ रहे हैं।

अर्थात प्रभु यीशु मसीह पिता द्वारा दी गई प्रतिज्ञा, एक वायदे को याद दिला रहे हैं। प्रतिज्ञा का अर्थ वायदा होता है। यह वायदा जो परमेश्वर पिता ने किया—प्रभु यीशु मसीह का पिता आज हमारा भी पिता है, वह परमेश्वर एक ही है—वह सारे मनुष्यों का सृष्टिकर्ता है।

उस पिता ने इस पृथ्वी पर सारे पुराने नियम के समय में कार्य किया। उनकी अगुवाई में सारा कार्य हुआ। हम अलग-अलग स्थानों पर देखेंगे तो वहां पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के सारे कार्य समझ में आते हैं।

लेकिन पुराने नियम में, Old Testament में, जो यहूदियों के साथ घटा, उस सारे समय में पिता ने इस पृथ्वी पर कार्य किया और विशेषकर यहूदियों के बीच कार्य करता रहा, जिसके द्वारा हमें पुरानी व्यवस्था अर्थात पुराना नियम मिला है। यहां पर प्रभु यीशु मसीह एक वायदे को बता रहे हैं, एक प्रतिज्ञा के बारे में बता रहे हैं—एक वायदा जो परमेश्वर पिता ने यहूदियों से किया था, अर्थात सारी मानवजाति के लिए किया था। वह प्रतिज्ञा क्या है?

यह प्रतिज्ञा हमें पुराने नियम के योएल नामक पुस्तक के दूसरे अध्याय के 28वें पद में मिलती है, जहां परमेश्वर पिता यह कहते हैं: "मैं अंत के समय में अपना आत्मा सारे प्राणियों पर उंडेलूंगा। " परमेश्वर पिता ने योएल 2:28 में सारी

मानवता के लिए एक प्रतिज्ञा की, एक वायदा किया, और परमेश्वर ने कहा कि अंत के समय में—आज हम अंत के समय में रह रहे हैं, यह अनुग्रह का युग है—परमेश्वर पिता आज के इस युग के लिए कहता है, "मैं अंत के समय में सारे प्राणियों के ऊपर अपना आत्मा उंडेलूंगा।

तुम्हारे बेटे और बेटियां भविष्यवाणी करेंगे, तुम्हारे बूढ़े स्वप्न देखेंगे, तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं अपना आत्मा उंडेलूंगा। " परमेश्वर जो भी कार्य करता है उसका यह एक सिद्धांत है, एक नियम है कि वह अपने कार्यों को इस पृथ्वी पर करने से पहले बोलता है, जिसे हम कहते हैं कि वह प्रतिज्ञा देता है। यीशु मसीह अपने चेलों को यह बता रहे हैं कि देखो, मेरे विषय में जो भी लिखा था, मैंने सारे कार्यों को क्रूस पर पूरा कर दिया है।

यीशु मसीह के कार्य मनुष्यजाति को मुक्ति दिलाने के थे—पापों से मुक्ति, मोक्ष, अनंत जीवन दिलाने का था—और उस कार्य को प्रभु यीशु मसीह ने पूर्णतः क्रूस पर किया। वे मारे गए और मरकर वे जिंदा हो गए। लेकिन अब वह यह बता रहे हैं कि देखो, मैं तो चला जाऊंगा लेकिन इस पृथ्वी पर तुम रह जाओगे, इसलिए मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ूंगा।

अकेला नहीं छोड़ूंगा। तुम्हारे लिए पिता ने एक व्यवस्था कर रखी है, एक प्रावधान दिया है। उस वायदे को अपने चेलों को याद दिलाकर वह कह रहे हैं कि मैं अपना आत्मा अर्थात पवित्र आत्मा तुम्हारे बीच में उंडेल दूंगा।

अध्याय 3: पवित्र आत्मा सत्य को प्रकट करता है

The Holy Spirit Unveils Divine Truth

आगे प्रभु यीशु मसीह अपने चेलों को और भी महत्वपूर्ण संदेश दे रहे हैं और उन्हें आश्वासन दे रहे हैं कि मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ूंगा। मैं तुम्हारे साथ पवित्र आत्मा के द्वारा आकर रहूंगा, संगति करूंगा। आगे हम यहुन्ना 16:13 में पढ़ते हैं: "परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा।

" यहां तीन मुख्य बातों को प्रभु यीशु मसीह कह रहे हैं कि जब पवित्र आत्मा अर्थात सत्य का आत्मा आएगा तो तुम्हें वह मार्गदर्शन करेगा, तुम्हें संदेश देगा और तुम्हारे भविष्य के बारे में भविष्यवाणी करेगा। तो यह सत्य का आत्मा अर्थात पवित्र आत्मा एक उत्तम मार्गदर्शक है। हम अभी देख चुके हैं कि Comforter का अर्थ क्या है—एक सलाहकार है, सहायक है।

वह हमारा परामर्शदाता है, वह हमारा सहायक है। यहां पर प्रभु यीशु मसीह बता रहे हैं कि इस अंधकारमय जीवन में, इस संसार में हमें ज्योति की तरह चलने के लिए एक मार्गदर्शक की आवश्यकता है। जैसे हम किसी ऐतिहासिक स्थान को देखने के लिए जाते हैं तो वहां एक मार्गदर्शक होता है जो उस स्थान के बारे में अच्छे से समझाता है कि कैसे इसकी स्थापना हुई, किसने इसको बनाया, क्या इसका उद्देश्य था।

उसी प्रकार इस संसार में परमेश्वर की ओर से यह पवित्र आत्मा आकर हमारा मार्गदर्शक बन जाता है। मार्गदर्शक बनने का अर्थ है कि वह हमें सत्य के मार्ग में हमारी अगुवाई करता है। हम किस प्रकार असत्य से बचकर सत्य में चल सकते हैं?

यह पवित्र आत्मा हमारी सहायता करता है। बिना पवित्र आत्मा के हम कुछ भी नहीं कर सकते, लेकिन पवित्र आत्मा के द्वारा हम सब कुछ कर सकते हैं। और सब कुछ का अर्थ यह है कि हम सत्य में चल सकें, क्योंकि यह मार्गदर्शक, यह पवित्र आत्मा, यह सत्य का आत्मा है।

यीशु मसीह कह रहे हैं कि यह तुम्हारी सहायता करेगा ताकि तुम सत्य के जीवन में चल सको और सत्य को जो यीशु मसीह है, उसको प्रकट कर सको। फिर दूसरी बात, यह सत्य का आत्मा अर्थात मार्गदर्शक हमारी क्या सहायता करेगा? वह हमें संदेश देगा।

संदेश का अर्थ है कि हमारा परमेश्वर पिता जिसकी हम संतान बन गए हैं, वह हमारे जीवन से क्या चाहता है। इफिसियों 2:10 में लिखा है कि "हम सब परमेश्वर के हाथों की रचना हैं। उसने हमें मसीह यीशु में एक नई सृष्टि बनाई है कि हम उसके भले कार्यों को कर सकें।

" तो हम कैसे उन कार्यों को, उन उद्देश्यों को करें? हमें एक संदेश चाहिए, हमें परमेश्वर से संवाद करना है। तो पवित्र आत्मा क्या करता है?

पवित्र आत्मा एक मार्गदर्शक के रूप में परमेश्वर की सारी बातों को, परमेश्वर की मनसा को हम तक, एक विश्वासी तक पहुंचाता है और उसे संदेश देता है। उसे वह बताता है कि उसे क्या करना है। पवित्र आत्मा अपनी ओर से कुछ नहीं कहेगा।

इसका अर्थ है कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एकता में कार्य करते हैं। जो कुछ परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह की मनसा है—the mind of God, the mind of Christ—the Holy Spirit will reveal everything in a believer's life। यह पवित्र आत्मा जो मार्गदर्शक है, वह अपनी ओर से कुछ न कहेगा, परन्तु जो पवित्र आत्मा परमेश्वर पिता से सुनेगा वही वह एक विश्वासी को बताएगा।

परमेश्वर आपको बचाना चाहता है, वह आपसे प्रेम करता है, और आपको एक विशेष उद्देश्य से इस पृथ्वी पर रखा है। परमेश्वर का एक उद्देश्य है। यीशु मसीह कहते हैं कि पवित्र आत्मा परमेश्वर की बातों को सुनेगा और वह तुम्हें बताएगा, तुम्हें मार्गदर्शन करेगा, और यीशु मसीह के कार्यों को हमारे जीवन में पूरा करेगा।

और अंत में, यह पवित्र आत्मा उन सारी बातों को जो एक विश्वासी के, एक व्यक्ति के जो मसीह में नई सृष्टि बन जाता है, उसके जीवन में घोषणा करता है। प्रभु यीशु मसीह अपने चेलों को ढाढ़स दे रहे हैं, हिम्मत दे रहे हैं, उनके शोकित हृदय में शांति दे रहे हैं, इस बात को बताकर कि यह पवित्र आत्मा जो सत्य का आत्मा है, वह आपके जीवन में आपके लिए एक उत्तम मार्गदर्शक होगा जो आपको सत्य पर ले जाएगा। दूसरी बात है कि वह परमेश्वर के संदेश को, परमेश्वर की बातों को आप तक पहुंचाएगा।

वह अपनी ओर से कुछ नहीं कहेगा, लेकिन जो सुनेगा उन्हीं बातों को वह आप तक बता सकेगा। और तीसरी बात है कि वह उन बातों को जो आपके जीवन में घटने वाली हैं, उस अच्छे भविष्य को आपको प्रकट करेगा। आपको बताएगा एक उत्तम मार्गदर्शक की तरह।

पवित्र आत्मा के बारे में प्रभु यीशु मसीह ने यहुन्ना के 14, 15, 16 अध्यायों में बहुत सी बातों को बताकर अपने चेलों के हृदय को दृढ़ करने का प्रयास किया है। यहुन्ना 16:14 में लिखा है: "वह मेरी महिमा करेगा और मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। " He will honor and glorify me, because He will take of and receive what is mine and will reveal and declare and disclose and transmit it to you।

अब यीशु मसीह यह कह रहे हैं कि वह जो मार्गदर्शक आएगा, जो पवित्र आत्मा आएगा, वह अपनी महिमा नहीं कराएगा। पवित्र आत्मा को अपनी महिमा कराने की आवश्यकता नहीं है—वह परमेश्वर है। लेकिन वह पवित्र आत्मा यीशु मसीह की महिमा करेगा।

महिमा का अर्थ होता है परमेश्वर की उपस्थिति को लाना—glory, the presence of God। जब हम यीशु मसीह को अपने जीवन में बढ़ाते हैं तो परमेश्वर की उपस्थिति भी हमारे जीवन में बढ़ती है। मसीह यीशु की महिमा वह कैसे करेगा?

मसीह के कार्यों को आपके जीवन के द्वारा कराकर। वह अपनी महिमा नहीं कराएगा, वह नहीं कहेगा कि मैं पवित्र आत्मा हूं, मुझे तुम महिमा दो, मुझे तुम आदर दो—वह तो हम देंगे ही। लेकिन वह क्या करेगा?

यीशु मसीह कहते हैं कि वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। पवित्र आत्मा वास्तव में बाइबिल का रचयिता है। सारी बातें जो मसीह के बारे में और मसीह के जीवन में घटी हैं, वह सारी बातों को पवित्र आत्मा जानता है।

पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचन को पुष्ट करता है। बिना पवित्र आत्मा के हम वचन को समझ नहीं सकते, उसके प्रकाशन को नहीं पा सकते। पवित्र आत्मा यीशु मसीह की बातों को बताता है, यीशु मसीह की महिमा को प्रकट करता है।

वह कहता है कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। जो-जो कार्य मसीह ने आदि से, सृष्टि की रचना से पहले से निर्धारित किया है, उन सब बातों को कौन प्रकट करेगा? पवित्र आत्मा करेगा।

यह पवित्र आत्मा अत्यंत प्रेमी परमेश्वर है। पवित्र आत्मा सब कुछ जानता है। पवित्र आत्मा आपकी दशा को जानता है, पवित्र आत्मा आपके परिवार की दशा को जानता है।

यह पवित्र आत्मा आपके जीवन में यीशु मसीह की महिमा को प्रकट करेगा। 1 यूहन्ना 3:8 में लिखा है: "परमेश्वर का पुत्र इस संसार में इसलिए प्रकट हुआ कि शैतान के कार्यों का नाश हो। " जब प्रभु यीशु मसीह की महिमा हमारे जीवन में प्रकट होती है तो संसार की बुराइयों का, शैतान के कार्यों का नाश होता है।

यहुन्ना 16:15 में लिखा है: "जो कुछ पिता का है वह सब मेरा है। इसलिए मैंने कहा कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा। " Everything the Father has is mine।

He said that the Spirit will take the things that are mine and will reveal and declare and disclose and transmit them to you। जो कुछ पवित्र आत्मा आपके लिए आवश्यक है, वह वही कहेगा जो प्रभु यीशु मसीह ने कहा है। प्रभु यीशु मसीह के हर एक वचन जो पृथ्वी पर कहे गए हैं वे दृढ़ हैं, इस पृथ्वी पर स्थापित हैं, और वे सारे वचन आज स्वर्ग में स्थापित हो चुके हैं।

और जब यह पवित्र आत्मा यीशु मसीह के वचनों को हमारे जीवन में दृढ़ कर देता है तो हमारे लिए असंभव संभव हो जाता है।

अध्याय 4: पवित्र आत्मा हमें पाप का बोध कराता है

The Holy Spirit Convicts Our Hearts

आगे यीशु मसीह कहते हैं: "और धार्मिकता के विषय में इसलिए कि मैं पिता के पास जाता हूं। " पवित्र आत्मा जब आएगा तो वह जगत में लोगों को पाप के लिए बोध कराएगा। और जब एक व्यक्ति पाप के लिए आश्वस्त हो जाता है, इस बात को जान लेता है कि पाप की वजह से वह परमेश्वर से नहीं मिल सकता, पाप की वजह से उसकी आत्मा में एक खालीपन है—ऐसी दशा में पवित्र आत्मा उसे यूं ही नहीं छोड़ देगा।

लेकिन यीशु मसीह कहते हैं कि वह यह बताएगा कि अब देखो, तुम्हारे लिए धार्मिकता उपलब्ध है क्योंकि मैं परमेश्वर के पास जा रहा हूं। तुम्हारे उद्धार के कार्य को मैंने पूरा कर दिया है, और यदि तुम मुझ पर विश्वास करोगे तो पवित्र आत्मा तुम्हें मेरा जीवन दे देगा। यीशु मसीह के जीवन को पाने का क्या अर्थ है?

यीशु मसीह के जीवन को पाने का अर्थ यह है कि यीशु मसीह का जीवन जो ईश्वरीय जीवन है—He is God Himself। मसीह का अर्थ है अभिषिक्त। परमेश्वर वह परमेश्वर मनुष्य बना जिसका नाम यीशु है।

और यीशु ने मनुष्यजाति के रिश्ते को फिर से परमेश्वर पिता के साथ जोड़ने के लिए उद्धार के सारे कार्यों को पूरा कर दिया। लिखा है कि जितनों ने प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास किया—यीशु मसीह के पास एक अधिकार है। अर्थात परमेश्वर पिता ने यीशु मसीह को जब इस मिशन पर पृथ्वी पर भेजा तो उसे अधिकृत करके दिया कि जो भी तुम्हारे इस उद्धार के कार्य पर विश्वास करेगा, तुम उसे अपना यह जीवन दे देना।

वह जीवन अनंत जीवन का जीवन है, और इसी जीवन को धार्मिकता कहते हैं। So the right life of God—so receive the life of God, Jesus Christ in person। Believe in Jesus, Holy Spirit gives new birth to a person, and the new birth gives new life—the righteous life of God।

प्रभु यीशु मसीह इसी बात को कह रहे हैं कि हां, जगत पाप में है, पाप की गुलामी में है। लेकिन मैंने पाप से बचने के उपाय को पूरा कर दिया है। अब जो धार्मिकता है वह उपलब्ध है।

परमेश्वर का वरदान हम सबके लिए अनंत जीवन है—eternal life है। यह अनंत जीवन धार्मिकता है। और जब पवित्र आत्मा आया तो उसका यह कार्य है कि प्रभु यीशु मसीह के उद्धार के वचन पर विश्वास करने के द्वारा मनुष्य को यह बताए कि अब तुम्हारे लिए धार्मिकता, यह निःशुल्क उपहार उपलब्ध है जिसे तुम विश्वास से ग्रहण कर सकते हो।

हम इसे अपनी शक्ति से नहीं पा सकते, लेकिन हम इसे एक उपहार के रूप में ले सकते हैं। और प्रभु यीशु मसीह कह रहे हैं कि पवित्र आत्मा पाप के लिए, इसलिए कि उन्होंने मुझ पर विश्वास नहीं किया; और धार्मिकता के विषय में,

इसलिए कि मैं परमेश्वर के पास जा रहा हूं और अब यह धार्मिकता सबके लिए एक उपहार के रूप में उपलब्ध है। 11वें पद में यीशु मसीह कहते हैं, "और तुम मुझे फिर न देखोगे।

" अर्थात प्रभु यीशु मसीह हाड़ और मांस में, इस शरीर में आज स्वर्ग में हैं। लेकिन वह पवित्र आत्मा के द्वारा इस पृथ्वी पर हर एक विश्वास करने वाले की आत्मा में रहते हैं—Christ, the hope of glory। "न्याय के विषय में इसलिए कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है।

" यह संसार का सरदार कौन है? यह संसार का सरदार वह है जिसने आदम से पाप कराकर इस पृथ्वी के सारे अधिकार को छीन लिया और इस पृथ्वी के ऊपर राज्य करने लगा और संसार का सरदार बन बैठा, जिसे शैतान कहते हैं। और यह शैतान चाहता है कि हर एक मनुष्य अविश्वासी बना रहे, परमेश्वर के प्रति अविश्वासी बना रहे।

अर्थात परमेश्वर ने जो विश्वास अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा दिया है, उस पर विश्वास न कर सके। यह उस संसार के ईश्वर का कार्य है। 2 कुरिन्थियों 4:4 में लिखा है: "और उन अविश्वासियों के लिए जिनकी बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है।

" यह संसार का ईश्वर कौन है? यह वही संसार का ईश्वर है जो संसार का सरदार है जिसके बारे में यीशु मसीह कह रहे हैं। यह वही शैतान है जिसके बारे में प्रभु यीशु मसीह बोल रहे हैं कि इसका न्याय हो चुका है।

और यह क्या करता है? अविश्वासियों की बुद्धि को अंधा कर देता है। The god of this world has blinded the believers' minds।

मन को अंधा कर दिया। क्यों? सत्य से दूर रखने के लिए।

यीशु मसीह यही कह रहे हैं कि तुम सत्य को जानो और सत्य तुम्हें स्वतंत्र कर देगा। यह संसार का ईश्वर लोगों की बुद्धि को अंधा किए रहता है ताकि मसीह, जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके। यह जो संसार का सरदार है, संसार का ईश्वर है, यह परमेश्वर की महिमा को एक मनुष्य के जीवन में चमकने से रोकता रहता है।

उसके ऊपर एक पर्दा डाल दिया है। यह पर्दा बहुत से प्रकार का हो सकता है, लेकिन पवित्र आत्मा प्रभु यीशु मसीह के वचन के द्वारा इस पर्दे को हटा देता है। और प्रभु यीशु मसीह इसी बात को कहते हैं कि इस संसार के ईश्वर ने, जिसने आदम को धोखा दिया और पृथ्वी का अधिकार ले लिया, उसके ऊपर न्याय हो चुका है।

मैं उस क्रूस की मृत्यु और जी उठने के द्वारा उस संसार के सरदार पर न्याय को लागू कर दूंगा। अर्थात वह दोषी ठहर चुका है। हमने देखा है कि पवित्र आत्मा इस जगत में तीन बातों के लिए लोगों को बोध कराता है: सबसे पहले पाप के लिए, दूसरी बात धार्मिकता के लिए, और तीसरा न्याय के लिए।

पाप के लिए—इसलिए कि उन्होंने यीशु मसीह पर विश्वास नहीं किया। धार्मिकता के लिए—इसलिए कि धार्मिकता आज यीशु मसीह में सबके लिए निःशुल्क उपलब्ध है। और न्याय के लिए—इसलिए क्योंकि संसार का सरदार दोषी

ठहराया गया है।

और अब यह मानवता, पहली मानवता, दूसरे आदम में एक नई सृष्टि बन सकती है केवल प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करके। पवित्र आत्मा एक अविश्वासी के जीवन को स्पर्श करके उसे विश्वासी बनाता है और वह परमेश्वर की संतान बन सकता है। आगे अपने चेलों को प्रभु यीशु मसीह और भी महत्वपूर्ण संदेश दे रहे हैं और उन्हें आश्वासन दे रहे हैं कि मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोडूंगा।

मैं तुम्हारे साथ पवित्र आत्मा के द्वारा आकर रहूंगा, संगति करूंगा। आगे हम यहुन्ना 16:13 में पढ़ते हैं: "परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा। " Amplified Bible में यह इस प्रकार लिखा है: But when He, the Spirit of truth, the truth-giving Spirit comes, He will guide you into all truth।

For He will not speak His own message on His own authority, but He will tell whatever He hears from the Father। He will give the message that has been given to Him, and He will announce and declare to you the things that are to come, that will happen in the future।

अध्याय 5: पवित्र आत्मा का बोध का कार्य

The Holy Spirit's Ministry of Conviction

आगे हम यहुन्ना रचित सुसमाचार के 16वें अध्याय के पांचवें पद से 11वें पद तक पढ़ेंगे, जहां इस प्रकार लिखा है: "अब मैं अपने भेजनेवाले के पास जाता हूं, और तुम में से कोई मुझसे नहीं पूछता कि तू कहां जाता है। परन्तु मैंने जो यह बातें तुमसे कही हैं, इसलिए तुम्हारा मन शोक से भर गया है। तौभी मैं तुमसे सच कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा।

परन्तु यदि मैं जाऊंगा तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा। और वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में बोध कराएगा। पाप के विषय में इसलिए कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते।

और धार्मिकता के विषय में इसलिए कि मैं पिता के पास जाता हूं और तुम मुझे फिर न देखोगे। न्याय के विषय में इसलिए कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है। " प्रभु यीशु मसीह अपने सेवाकाल के अंतिम समय में आ गए थे और अपने चेलों से बता रहे हैं कि मैं अपने भेजनेवाले के पास अब वापस जाने पर हूं।

जिस कार्य के लिए परमेश्वर ने मुझे इस पृथ्वी पर भेजा था उसे मैं क्रूस के द्वारा पूरा करूंगा, दुख को उठाऊंगा, और तीसरे दिन मरकर जिंदा होऊंगा। और फिर मैं पिता के पास चला जाऊंगा। इसलिए तुम यहां पर अकेले नहीं रह जाओगे।

मेरा जाना बहुत आवश्यक है क्योंकि यदि मैं जाऊंगा तभी वह पवित्र आत्मा तुम्हारे पास आएगा। और वह क्यों आएगा? ताकि वह तुम्हारे साथ उत्तम संगति दे।

लिखा है, "यदि मैं जाऊंगा तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा। " चेलों का मन बहुत शोकित हो गया था, दुखित हो गया था क्योंकि वे इतने वर्षों तक प्रभु यीशु मसीह के साथ रहे थे। यीशु मसीह के साथ उन्होंने कार्यों को देखा, सीखा, परमेश्वर के राज्य की बाट जोह रहे थे।

और प्रभु यीशु मसीह कह रहे हैं कि मैं अपने भेजनेवाले के पास चला जा रहा हूं। स्वाभाविक था कि चेलों का मन बहुत शोकित हो जाए, और उनके शोक को दूर करने के लिए प्रभु यीशु मसीह उस पवित्र आत्मा की चर्चा कर रहे हैं और यह बता रहे हैं कि यह पवित्र आत्मा जो मैं पिता के पास से भेजूंगा, वह तुम्हारे साथ घनिष्ठ संगति देगा। अर्थात इतनी घनिष्ठ संगति जो एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को नहीं दे सकता, वह पवित्र आत्मा तुम्हारी आत्मा के साथ देगा।

यह तुम्हारे लिए आवश्यक है कि मैं उस पवित्र आत्मा को भेजूं। आगे प्रभु यीशु मसीह तीन महत्वपूर्ण बिंदुओं को अपने चेलों के साथ छू रहे हैं। वह केवल उन्हीं के लिए नहीं, परन्तु आज संसार के लिए, आगे आने वाले हर एक प्राणी के लिए।

जब तक प्रभु यीशु मसीह दोबारा नहीं आते हैं, यह वचन वैसा ही लागू है कि जब पवित्र आत्मा आएगा तो वह जगत के मनुष्यों को तीन मुख्य प्रश्नों के प्रति बोध कराएगा, उन्हें आश्वस्त करेगा। ये तीन प्रश्न हैं जो हर एक मनुष्य को सताते हैं, और वे प्रश्न हैं: पाप, धार्मिकता और न्याय। बाइबिल में बहुत स्पष्टता से लिखा है कि हर एक मनुष्य जो शरीर में जन्म लेगा वह शरीर में मरेगा, लेकिन उसके शरीर और आत्मा दोनों का न्याय होगा।

तीन प्रश्न क्या हैं जो मनुष्य की आत्मा को हमेशा झकझोरते रहते हैं? यह प्रश्न मनुष्य को जब वह अकेला होता है तो परेशान कर देते हैं। यह पाप, धार्मिकता और न्याय—यीशु मसीह कह रहे हैं कि जब पवित्र आत्मा आएगा तो वह तुम्हें और सारे मनुष्यों को जो मेरे वचन को सुनेंगे, उन्हें एक सही उत्तर दे देगा।

पाप के विषय में क्या? लिखा है, "पाप के विषय में इसलिए कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते। " हर एक व्यक्ति जो पहले आदम में जन्म लेता है, हर वह जो शरीर में जन्म लेता है, वह पहले आदम में जन्म लेता है।

यह एक सच्चाई है और उस आदम के पाप का फल हर एक के जीवन में आता है। पौलुस ने इसे बहुत स्पष्टता से बताया है कि "सब ने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित हो गए। " महिमा से रहित होने का अर्थ है कि उनके अंदर से परमेश्वर की महिमा, परमेश्वर की उपस्थिति अलग हो गई है।

आज हर एक व्यक्ति के अंदर परमेश्वर नहीं है—यह एक सच्चाई है। लेकिन परमेश्वर यह चाहता है कि हर एक मनुष्य के अंदर वह आ जाए, हर एक मनुष्य का शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर हो जाए। यह परमेश्वर का कार्य है जिसे पवित्र आत्मा पूरा करता है।

आदम के कारण जो मनुष्य के अंदर पाप आया, उस पाप के दंड को किसी और ने उठा लिया। पाप से छुड़ाने का उपाय प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर कर दिया। और इसीलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह को इस संसार में भेजा।

यूहन्ना 3:16 में लिखा है: "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनंत जीवन पाए। " नाश होने का अर्थ है कि वह मृत्यु के वश में न जाए परन्तु अनंत जीवन को पा सके। "परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा कि जगत पर दंड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।

" और इस बात को यीशु मसीह ने भी कहा कि मैं पापियों का नाश करने नहीं आया हूं, उन पर दंड की आज्ञा देने नहीं आया हूं, परन्तु उन्हें दंड की आज्ञा से बचाने आया हूं। यीशु मसीह इसलिए आए कि हम जो पापी थे वे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा बचा लिए जाएं। परमेश्वर का प्रभु यीशु मसीह को भेजने का यह उद्देश्य था, यह मिशन था प्रभु यीशु मसीह के लिए कि वे मनुष्यजाति को, पहले आदम में जो मानवता है, उसके दंड की आज्ञा से बचा लें।

और वे कैसे बचा सकते थे? उन्होंने उस दंड की आज्ञा को अपने ऊपर उठा लिया। सारी मानवता के पापों के लिए उन्होंने मृत्यु की सजा सह ली, जिसके द्वारा आज जगत यीशु मसीह के द्वारा उद्धार पा सकता है।

18वें पद में लिखा है: "जो उस पर विश्वास करता है उसे दंड की आज्ञा नहीं होती। " क्या विश्वास करता है? यह विश्वास करता है कि जो दंड की आज्ञा मुझे मिलनी थी वह यीशु मसीह ने ले ली।

यीशु मसीह ने हमारे पाप को अपने देह पर उठाकर क्रूस पर चढ़ गए कि हम पाप के लिए मरकर धार्मिकता के लिए जीवन पाएं। बहुत ही गंभीर शब्द आगे लिखा है: "परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता वह दोषी ठहर चुका, इसलिए कि उसने परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। " अंतिम समय में जब प्रभु यीशु मसीह न्याय करेंगे—और न्याय सभी का होगा, धर्मियों का भी होगा और अधर्मियों का भी होगा—धर्मी कौन है?

जिन्होंने प्रभु यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण कर लिया है, उन पर दंड की आज्ञा नहीं है। लेकिन जिन्होंने प्रभु यीशु मसीह के उस बलिदान को अस्वीकार कर दिया, इस सच्चाई को अस्वीकार कर दिया कि प्रभु यीशु मसीह उनके लिए मारे गए, तो उन पर वह दंड की आज्ञा बनी हुई है। और इस दंड का परिणाम एक व्यक्ति को भुगतना पड़ेगा—वह यह होगा कि वह पाप से मुक्त नहीं हो पाया।

यह नहीं कि उसने क्या किया है, कितने अच्छे कार्य किए हैं या कितने बुरे कार्य किए हैं, परन्तु जो न्याय होगा, अंतिम न्याय होगा, वह इस बात का होगा कि अमुक व्यक्ति ने यीशु मसीह पर विश्वास किया है, उसे उद्धारकर्ता माना है, या उसने विश्वास नहीं किया है और उस पर दंड की आज्ञा हो चुकी है। पवित्र आत्मा इस जगत में आकर इस बात के लिए मनुष्यों को बोध कराएगा—पाप के विषय में इसलिए कि उन्होंने यीशु मसीह पर विश्वास नहीं किया, कि प्रभु यीशु मसीह पापों से बचाने के लिए उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता हैं।

अध्याय 6: पवित्र आत्मा एक सांत्वनादाता है

The Holy Spirit – Our Divine Comforter

प्रेरितों की पुस्तक के पहले अध्याय के चौथे पद से हम यीशु मसीह की पवित्र आत्मा के विषय में बातचीत को लेते हुए यूहन्ना 14 तक पहुंचे हैं। और आज हम उसके 26वें पद पर ध्यान देंगे, जहां इस प्रकार लिखा है: "परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा। " Amplified Bible में कुछ इस प्रकार लिखा है: Comforter (Counselor, Helper, Intercessor, Advocate, Strengthener and Standby), the Holy Spirit, whom the Father will send in my name, in my place, to represent me and act on my behalf, He will teach you all things and He will cause you to recall, will remind you of and bring to your remembrance everything I have told you।

Amplified Bible में बहुत अच्छे से इसे परिभाषित किया गया है कि यह पवित्र आत्मा हमारा सहायक है। और वह पवित्र आत्मा किसके नाम से आएगा? यीशु मसीह यह कहते हैं कि जब मैं चला जाऊंगा तो वह सहायक जो आएगा वह मेरे नाम से आएगा।

और वह नाम क्या है—यीशु? यीशु एक ऐसी उपाधि है, एक ऐसा पद है जो मसीह को दिया गया, हमारे लिए दिया गया, मानवता के लिए दिया गया। स्वर्ग के नीचे, पृथ्वी के ऊपर, मनुष्यों के बीच और कोई दूसरा नाम नहीं है।

इस नाम की बहुत गहराई है। और यीशु मसीह कहते हैं कि वह मेरे नाम से आएगा और क्या करेगा? वह सारी बातों को जो मैंने तुमसे कहीं, तुम्हारे साथ साढ़े तीन साल तक इस पृथ्वी पर रहकर जो कार्य किया, जो शिक्षाएं दीं, उन सारी बातों को याद दिलाएगा—He will bring you to remember।

आज हम कैसे उन बातों को जो दो हजार सोलह वर्ष पहले घटी हैं, जान जाते हैं? किस प्रकार हमारा हृदय परिवर्तित हो जाता है? हम क्यों विश्वास कर लेते हैं?

हमने नहीं देखा यीशु मसीह को क्रूस पर मरते हुए, न हमारे दादा-परदादा या चौथी-पांचवीं पीढ़ी ने देखा। लेकिन दो हजार सोलह वर्ष पहले एक साक्षी था, एक व्यक्ति था जिसका नाम पवित्र आत्मा है। और यीशु मसीह अपनी चर्चा में उनसे यही बता रहे हैं कि जब मैं चला जाऊंगा तो तुम और तुम्हारे बाद जितने भी लोग आएंगे, उन सारी बातों को जो मैंने इस पृथ्वी पर रहकर कहीं, वह याद दिलाएगा।

वह कहता है, "In my place"—मेरे स्थान पर आएगा। तो हम मसीह यीशु को कैसे अपने जीवन में रख सकते हैं, कैसे उससे जुड़ सकते हैं? यह कार्य पवित्र आत्मा का है।

वह कहता है, "In my place, to represent me, on my behalf"—कितना महत्वपूर्ण कार्य यह व्यक्ति कर रहा है! यह परमेश्वर का तीसरा व्यक्तित्व है जिसका नाम पवित्र आत्मा है। और यह पवित्र आत्मा परमेश्वर पिता से निकलकर यीशु मसीह के कार्यों को आज इस पृथ्वी पर कर रहा है।

और यह बहुत अद्भुत है कि वह प्रभु यीशु मसीह के नाम से आ रहा है। यीशु मसीह के नाम में बहुत कुछ संभव है। जो बात मनुष्य के द्वारा असंभव है वह परमेश्वर के द्वारा संभव है, उसके नाम में।

उसके नाम में बहुत कुछ है। यहां पर यीशु मसीह कह रहे हैं कि वह पवित्र आत्मा, वह सहायक, वह मार्गदर्शक, वह सहायता करने वाला मेरे नाम से आएगा और मुझे प्रस्तुत करेगा, मेरे स्थान पर रहेगा। तो आज जब हम प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर रहे हैं कि क्रूस पर यीशु मसीह ने सारी मानवता की एक नई रचना की—इफिसियों 2:10 में लिखा है, "We are the workmanship of God"—हम सब परमेश्वर के हाथों की बनाई हुई रचना हैं।

पहले उसने बाग-ए-अदन में आदम को मिट्टी से लेकर बनाया था। लेकिन जब वह रचना बिगड़ गई तब परमेश्वर ने अपने पुत्र प्रभु यीशु मसीह में, उस कलवरी के क्रूस के ऊपर, उसके शरीर के अंदर पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से एक नई सृष्टि की रचना की। और यही नई सृष्टि है जिसमें हर एक को आना है।

यह एक नई मानवता है। पहला आदम एक मानवता था, लेकिन यह मानवता एक नई सृष्टि के रूप में प्रभु यीशु मसीह में आ गई। जब हम नई सृष्टि बन जाते हैं, जैसा कि 2 कुरिन्थियों 5:17 में लिखा है कि "जो मसीह में है वह एक नई सृष्टि है," यह नई सृष्टि कैसे कार्य करती है?

किसकी सहायता इसे प्रदान होती है? वह है पवित्र आत्मा। प्रेरितों के काम में स्वर्ग में जाने से पहले इस महत्वपूर्ण चर्चा को, वायदे को जो पवित्र आत्मा के विषय में था, यीशु मसीह पवित्र आत्मा के द्वारा इस सारी चर्चा को, सारी आज्ञाओं को दे रहे हैं।

पवित्र आत्मा यीशु मसीह के जीवनकाल से लेकर मृत्यु, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और राज्याभिषेक तक सारी बातों में साथ रहा, और वही पवित्र आत्मा आज हमारे बीच में है। उसने इस कलियुग को एक अनुग्रह का युग बना दिया है। पवित्र आत्मा हर एक के जीवन में मसीह के किए हुए कार्यों को बताना चाहता है, मसीह की बातों को बताता है, उन्हें याद दिलाता है।

जब हम परमेश्वर के वचन को पढ़ते हैं तो वह हमें उसका प्रकाशन देता है। यह ज्ञान नहीं है, यह प्रकाशन है जो मनुष्य की आत्मा में प्रकट होता है। हो सकता है बड़ी-बड़ी पुस्तकों को पढ़कर, बड़ी-बड़ी कक्षाओं में पढ़कर हम ज्ञान को हासिल कर लें।

लेकिन पवित्र आत्मा क्या करता है? पवित्र आत्मा हमारी आत्मा में परमेश्वर, उसके पुत्र प्रभु यीशु मसीह के किए हुए कार्यों को जो उसने हमारे जीवन में किए हैं, उन सारी बातों को प्रकट करता है, प्रकाशित करता है। तब हम उन सच्चाइयों को जान सकते हैं कि प्रभु यीशु मसीह ने कितना बड़ा बलिदान सारी मानवता के लिए कर दिया।

और यह बलिदान एक साधारण बलिदान नहीं था, किसी एक मनुष्य का बलिदान नहीं था, लेकिन सारी मानवता का जो पहले आदम में थी, उस पापमय मानवता का बलिदान था। यीशु मसीह के निष्पाप, निष्कलंक शरीर के अंदर—अर्थात परमेश्वर ने मानवता के सारे पापों को यीशु मसीह के शरीर पर रखकर उसके ऊपर दंड की आज्ञा दे दी। और यह दंड की आज्ञा मृत्यु की आज्ञा थी, क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है, और परमेश्वर का वरदान सारी मानवता के लिए अनंत जीवन, मोक्ष है।

यह पवित्र आत्मा हमारी आत्मा को स्पर्श करता है, बताता है। इसलिए पवित्र आत्मा बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए प्रभु यीशु मसीह इसकी बार-बार अपने चेलों से चर्चा कर रहे हैं। चेले बहुत डरे हुए थे, घबराए हुए थे क्योंकि यीशु मसीह ने कह दिया था कि अब मैं तुम्हें छोड़कर जा रहा हूं।

लेकिन उन्हें बड़ी शांति मिली जब प्रभु यीशु मसीह ने यह कहा कि मैं तुम्हारे बीच में फिर होऊंगा—शरीर में नहीं, लेकिन आत्मा में। पवित्र आत्मा आज हर एक यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले के अंदर आकर रहता है और उसे सारी बातों को जो प्रभु यीशु मसीह ने बताईं, स्मरण कराता है। हम यीशु मसीह को तभी जान सकते हैं जब हम पवित्र आत्मा को जानें।

तो पवित्र आत्मा हमारे लिए, हर एक विश्वासी के लिए बहुत आवश्यक है। कुलुस्सियों 3:16 में लिखा है: पौलुस कहते हैं कि "मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से भरें। " और जब हम परमेश्वर के वचन को, मसीह के वचन को अपनी आत्मा में भरते हैं, तब पवित्र आत्मा उन वचनों को खोलता है और उन वचनों की बातों को, भेदों को, उस रहस्य को जो परमेश्वर ने छिपाया नहीं है, वह हमारे जीवन में प्रकट करता है, याद दिलाता है, स्मरण में लाता है, और हमारी सहायता करता है कि हम इस आत्मिक जीवन में अपनी सेवा में आगे बढ़ सकें।

अध्याय 7: पवित्र आत्मा एक गवाह है

The Holy Spirit Bears Witness

पिछले कार्यक्रम में हमने देखा कि किस प्रकार पवित्र आत्मा इस पृथ्वी पर आकर हमें सिखाता है और मसीह की बातें स्मरण दिलाता है। इसी क्रम में हम आज आगे बढ़ेंगे और यूहन्ना रचित सुसमाचार के 15वें अध्याय के 26वें पद को पढ़ेंगे, जहां कुछ इस प्रकार लिखा है: "परन्तु जब वह सहायक आएगा जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूंगा, अर्थात सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा। " अब हम Amplified Bible से पढ़ेंगे: But when the Comforter comes, whom I will send to you from the Father, the Spirit of truth, who comes and proceeds from the Father, He will testify regarding me।

जो पवित्र आत्मा प्रभु यीशु मसीह पिता से विनती करके भेजेंगे, वह आत्मा सत्य का आत्मा है। जैसा कि यीशु मसीह ने पहले भी उल्लेख किया कि यह आत्मा सत्य का आत्मा है जो हमारे जीवन में सत्य को प्रकट करे। और यह सत्य का आत्मा क्या करेगा?

पहले हमने देखा कि वह किस प्रकार हमारे अंदर रहेगा, हमारी सहायता करेगा। और इस 15वें अध्याय के 26वें पद में हम पढ़ते हैं कि पवित्र आत्मा मसीह यीशु की गवाही देगा। यह गवाह का क्या अर्थ होता है, इसे हम समझते हैं।

आज संसार में भी जब हम रहते हैं तो देखते हैं कि इस गवाही का कितना महत्व होता है। किसी भी घटना के क्रम में, यदि कहीं भी किसी भी स्थान में कोई घटना हो जाती है—आपके घर के पास या आपके शहर-मोहल्ले में कोई घटना घटती है—पुलिस आती है तो उस घटना के चश्मदीद गवाह को पूछती है कि किसने इस घटना को देखा है। न्यायालय में भी फैसला गवाह के आधार पर किया जाता है कि क्या जो घटना घटी है उसे किसी ने देखा है।

दो या तीन गवाहों के द्वारा बहुत सी बातें पक्की हो जाती हैं। यहां प्रभु यीशु मसीह अपने चेलों से कह रहे हैं कि पवित्र आत्मा आएगा तो वह मेरी गवाही देगा। अर्थात यह पवित्र आत्मा सारी बातों को याद रखता है।

वह बुद्धिमान है, उसके पास बुद्धि है, उसके पास भावनाएं हैं, और उस पवित्र आत्मा के पास एक इच्छा है। और यह तीनों चीजें एक व्यक्तित्व को बनाती हैं। यहां पर यीशु मसीह इस बात को बता रहे हैं कि वह एक व्यक्ति है, एक सहायक है जो तुम्हारे साथ रहेगा और वह मेरी गवाही देगा।

यह गवाही किस प्रकार की है? क्या गवाही की आवश्यकता आज हमें है? या उस समय में जब प्रभु यीशु मसीह के साथ चेले थे जो प्रेरित बने, जिन्होंने सारे संसार में प्रभु यीशु मसीह की गवाही दी, उन्हें पवित्र आत्मा के गवाह के रूप में आने की क्या आवश्यकता थी?

प्रेरितों के काम 4:33 में लिखा है: "और प्रेरित बड़ी सामर्थ्य से प्रभु यीशु मसीह के जी उठने की गवाही देते थे। " प्रभु यीशु मसीह के जो चेले हैं, जो प्रेरित हैं, उन्हें एक गवाह की आवश्यकता थी जिसने सारी घटना क्रम को समझा, जो यीशु मसीह के साथ घटा—उनके साढ़े तीन वर्ष की इस पृथ्वी की सेवा, क्रूस की मृत्यु, यीशु मसीह का जी उठना और उनका स्वर्गारोहण। पवित्र आत्मा कोई प्रभाव नहीं है, कोई बादल या कोई हवा या कोई बिजली नहीं है।

पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है, एक आत्मिक प्राणी है जो हमारे शरीर में आकर रह सकता है। पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है, और यह प्रेरितों के जीवन में सामर्थ्य देता है कि वे गवाही दें। इस बात की गवाही की आवश्यकता थी जो यीशु मसीह जानते थे कि चेलों को देनी है।

और जो सबसे बड़ी गवाही है जो यीशु मसीह के चेलों के द्वारा हम सभी को मिली, इन वचनों को पढ़ने के द्वारा—यीशु मसीह के चेलों, प्रेरितों के द्वारा जो नया नियम लिखकर हमें दिया गया है। यह बताता है कि इन चेलों ने जो गवाही दी वह पवित्र आत्मा के द्वारा हमें इस नियम की पुस्तक के रूप में मिली है। यह परमेश्वर का जीवित वचन है, यह नया नियम है, नया विधान है, यीशु मसीह के लहू में एक नई वाचा है।

जब प्रभु यीशु मसीह अपने चेलों से चर्चा कर रहे हैं और यह बता रहे हैं कि यह पवित्र आत्मा आएगा तो वह मेरी गवाही देगा—और जब उस गवाही को उनके चेलों ने अपनी आत्मा में प्रकाशन के रूप में देखा, तो पतरस खड़े होकर बोला और बताया कि प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु का रहस्य क्या है। वे सारे रहस्य और सारे भेद की बातें जब पवित्र आत्मा उनके जीवन में आया तब पवित्र आत्मा ने सारी बातों की उन्हें गवाही दी। और जैसा कि अभी हमने पढ़ा, "और प्रेरित बड़ी सामर्थ्य से"—यह सामर्थ्य किसकी है?

यह सामर्थ्य, यह साहस पवित्र आत्मा देता है, जिसकी चर्चा प्रभु यीशु मसीह अपनी मृत्यु से पहले कर रहे हैं। और वह यह कह रहे हैं कि यह गवाही देगा, मेरी गवाही देगा कि मैं मरे हुओं में से जी उठा हूं, इसलिए मुझ पर विश्वास कर सकते हो। जब पवित्र आत्मा को प्रेरितों ने पाया तो लिखा है प्रेरितों के काम 4:33 में कि वे बड़ी सामर्थ्य से प्रभु यीशु मसीह के जी उठने की गवाही देते थे।

और यह गवाही, यह घटना संसार के लिए मुक्ति का एक द्वार है। जैसा लिखा है कि "क्रूस की कथा नाश होने वालों के लिए मूर्खता है, पर हम विश्वास करने वालों के लिए यह परमेश्वर की सामर्थ्य है। " यह पवित्र आत्मा इसलिए आया, इसकी चर्चा इसलिए प्रभु यीशु मसीह ने की, क्योंकि आज के इस युग में इसी पवित्र आत्मा के द्वारा हम यीशु मसीह के जी उठने के गवाह हैं।

यूहन्ना 15:26 में कहते हैं कि जब वह तुम्हारे पास आएगा जो परमेश्वर पिता से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा, क्योंकि पवित्र आत्मा ने सारी घटना क्रम को बड़ी बारीकी से देखा है—यीशु मसीह के दुख उठाए जाने को देखा है, उनके जन्म से उनके सारे जीवनकाल में सेवा को, यीशु मसीह के क्रूस पर मृत्यु को सहने को, यीशु मसीह की मृत्यु और उनके जी उठने को। और यीशु मसीह की मृत्यु और उनके जी उठने का एक गवाह जो आज भी हमारे बीच उपस्थित है, वह है पवित्र आत्मा।

तो यह पवित्र आत्मा हमारे लिए कितना आवश्यक है, कितना महत्वपूर्ण है! यह पवित्र आत्मा हमें यीशु मसीह की गवाही देता है और यह बताता है कि यह घटना घटी थी आज से दो हजार सोलह वर्ष पहले—यीशु मसीह क्रूस पर मरे और मरकर जिंदा हुए। जब इस घटना को कोई अपनी अंतरात्मा में मानता है तो पवित्र आत्मा उसकी आत्मा के साथ गवाही देता है।

और यह चर्चा प्रभु यीशु मसीह अपने चेलों से कर रहे हैं, क्योंकि यह पवित्र आत्मा हमें बताता है, हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, और यह कहता है कि तुमने यीशु मसीह पर विश्वास किया है, और इसलिए यीशु मसीह ने तुम्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दे दिया। रोमियों 8:16 में ऐसा लिखा है: "आत्मा अर्थात पवित्र आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है। " किसकी गवाही देता है?

यह गवाही देता है कि तुमने यीशु मसीह पर विश्वास किया है, तुमने उनकी मृत्यु, उनके जी उठने पर विश्वास किया है, तुमने उनकी प्रभुता को ग्रहण किया है। इसलिए यीशु मसीह ने तुम्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दे दिया है। इस यूहन्ना 15:26 में प्रभु यीशु मसीह पवित्र आत्मा के बारे में यही चर्चा कर रहे हैं कि वह पवित्र आत्मा जिसे परमेश्वर पिता भेजेगा, केवल चेलों के साथ ही नहीं रहेगा, केवल प्रेरितों के ही साथ नहीं रहेगा, लेकिन आज हर एक यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले के साथ रहेगा।

वह सामर्थ्य जो यीशु मसीह के प्रेरितों को पवित्र आत्मा ने दिया, वे अद्भुत काम और चमत्कार जो उनके हाथों के द्वारा कराए, वे आज भी पवित्र आत्मा हर एक विश्वासी के साथ करता है, क्योंकि यीशु मसीह का वचन कहता है कि "विश्वास करने वालों के ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से बीमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएंगे। यीशु मसीह के नाम से दुष्टात्माएं निकलेंगी। यीशु मसीह के नाम से अन्य भाषाएं बोलोगे।

" यह कार्य जो पवित्र आत्मा ने यीशु मसीह के समय के प्रेरितों के बीच किया, आज वह सारी सेवा, वे सारे कार्य, वही पवित्र आत्मा जो मसीह की गवाही देता है, वह अपने विश्वासियों से, यीशु मसीह पर विश्वास करने वालों के जीवन से उन गवाहियों को कराता है, और यह बताता है कि प्रभु यीशु मसीह जी उठे हैं। और यह बहुत सुंदर सुसमाचार है। हो सकता है आपने जन्म से यीशु मसीह के बारे में सुना होगा कि यीशु मसीह एक अच्छे गुरु हैं, एक अच्छे शिक्षक हैं, एक अच्छे चंगा करने वाले हैं।

लेकिन सबसे बड़ी बात जो प्रभु यीशु मसीह के बारे में पवित्र आत्मा गवाही देता है वह यह है कि यीशु मसीह जगत के मुक्तिदाता हैं। यह ऐसा मेमना है जो जगत के पापों को उठा ले गया है। यह गवाही केवल पवित्र आत्मा देता है, जो पवित्र आत्मा आपकी अंतरात्मा में इस प्रकाशन को दे देता है कि यीशु मसीह आपके लिए मारे गए, गाड़े गए और मरकर जी उठे हैं।

तो आपके जीवन के द्वारा वह बहुतों के लिए आशीष का कारण बनता है। यह पवित्र आत्मा बहुत वास्तविक है, और यह परमेश्वर, एक ऐसा व्यक्तित्व है, परमेश्वर का व्यक्तित्व है जो मनुष्य की अंतरात्मा को शुद्ध करके उसमें आकर रहता है।

नई सृष्टि के बारे में / About Nayi Srishti

Rev. Sarvjeet Herbert is the founder of Nayi Srishti Ministries, dedicated to spreading the Gospel and discipleship across India. His teachings reach thousands through YouTube and other platforms.

रेवरेंड सरवजीत हरबर्ट नई सृष्टि सेवकाई के संस्थापक हैं, जो भारत में सुसमाचार के प्रचार और शिष्यत्व में समर्पित है। उनकी शिक्षाएं हजारों लोगों तक यूट्यूब और अन्य मंचों के माध्यम से पहुंचती हैं।

पुस्तक / Book: पवित्र आत्मा: सामर्थ्य, उद्देश्य और प्रतिज्ञा / The Holy Spirit: Power, Purpose and Promise

YouTube: Nayi Srishti

Available on: Amazon Kindle